

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ पचास

यहेजकेल 37 की व्याख्या और अंतिम दिनों से उसकी प्रासंगिकता

Jeff Pippenger

2024-03-21

दो राष्ट्रों के एक होने की प्रक्रिया का वर्णन करने के बाद, यहजकेल यह बताता है कि उस राष्ट्र पर राजा दाऊद का शासन होगा, और यह कि वह उनके साथ वाचा करेगा, और यह कि उसका तंबू उनके साथ होगा।

अब आगे वे अपनी मूर्तियों से, अपनी घृणित वस्तुओं से, और अपने किसी भी अपराध से अपने आप को फिर कभी अपवित्र नहीं करेंगे; परन्तु मैं उन्हें उनके उन सब निवास-स्थानों से, जहाँ उन्होंने पाप किया है, छुड़ा लूँगा और उन्हें शुद्ध कर दूँगा; तब वे मेरी प्रजा होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। और मेरा दास दाऊद उन पर राजा होगा; और उन सबका एक ही चरवाहा होगा। वे मेरी विधियों में चलेंगे, मेरे विधानों को मानेंगे, और उनका पालन करेंगे। और वे उस देश में बसेंगे जिसे मैंने अपने दास याकूब को दिया था, जहाँ तुम्हारे पितरों ने निवास किया था; और वे स्वयं, उनके बच्चे और उनके बच्चों के बच्चे सदा सर्वदा वहाँ बसेंगे; और मेरा दास दाऊद सदा उनके ऊपर शासक रहेगा। इसके अतिरिक्त मैं उनके साथ शान्ति की वाचा करूँगा; वह उनके साथ सदा की वाचा होगी; और मैं उन्हें बसाऊँगा, और उनकी संख्या बढ़ाऊँगा, और अपना पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिए स्थापित करूँगा। मेरा मण्डप भी उनके साथ रहेगा; हाँ, मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे। और अन्यजातियाँ जान लेंगी कि मैं, यहोवा, इस्राएल को पवित्र ठहराता हूँ, जब मेरा पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिए रहेगा। यहजकेल 37:23-28.

यहेजकेल का अध्याय सैंतीस एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगाए जाने का बहुत ही विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। वे दो लकड़ियाँ, जो तब एक राष्ट्र बनेंगी जब दैवीयता मानवता से संयुक्त होगी, और उनके ऊपर एक राजा होगा। वह एक राष्ट्र अंतिम दिनों की परमेश्वर की कलीसिया है, जो एक लाख चवालीस हज़ार हैं। वे दो लकड़ियाँ इस्राएल के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के तितर-बितर होने के दो कालखंड हैं। वे दो लकड़ियाँ वही हैं जिन्हें पौलुस "देह" कहता है, और उसी देह का "सिर" मसीह को बताता है। यहजकेल पौलुस के "सिर" को "राजा दाऊद" और "देह" को "एक राष्ट्र" के रूप में पहचानता है।

1856 में एडवेंटवाद को प्रदत्त संदेश में, जिसका प्रतिनिधित्व 1856 में हाइरम एडसन की "seven times" पर अधूरी श्रृंखला करती है, एडसन यशायाह अध्याय सात की पैसठ-वर्षीय भविष्यवाणी को दोनों "seven times" अवधियों के प्रारंभ-बिंदुओं के लिए बाइबिलीय संदर्भ-बिंदु के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह पैसठ-वर्षीय समय-भविष्यवाणी एक रहस्यमय संदर्भ में स्थापित की गई है, जो प्रकाशितवाक्य की उन वचनों के समान है जो कहते हैं, 'he who hath ears, let him hear.' यदि आपकी आँखें परख सकें, और आपके कान समझ सकें, तो उस पद्यांश में कुछ अत्यन्त अद्भुत है।

क्योंकि अराम का सिर दमिश्क है, और दमिश्क का सिर रसीन; और पैसठ वर्ष के भीतर एप्रैम ऐसा तोड़ा जाएगा कि वह जाति न रहेगा। और एप्रैम का सिर सामरिया है, और सामरिया का सिर रमल्याह का पुत्र है। यदि तुम विश्वास न करोगे, तो निश्चय तुम स्थिर न रहोगे। यशायाह 7:8, 9.

पैसठ-वर्षीय भविष्यवाणी 742 ईसा-पूर्व में आरंभ हुई, और उन्हीं पैसठ वर्षों के भीतर, उन्नीस वर्ष बाद, 723 ईसा-पूर्व में, इस्राएल के उत्तरी राज्य को अशूर द्वारा दासत्व में ले जाया गया, और जब वे वर्ष 677 ईसा-पूर्व में समाप्त हुए, तब मनश्शे बाबेल द्वारा बंदी बनाकर ले जाया गया। उन पैसठ वर्षों का संकेत उन पूर्तियों में भी मिलता है, जो उन दो राष्ट्रों के विखराव के अंत से संबंधित हैं, जो यहजकेल के वर्णन में एक लाठी बनने थे। इन पूर्तियों ने क्रमशः 1798, 1844 और 1863 को चिह्नित किया। जिन पदों में उस संदेश की पहचान की गई है जिसे 1863 में अस्वीकार

किया गया था, उनमें एक विशिष्ट भविष्यसूचक प्रकटीकरण है, जिसमें वह भविष्यवाणी प्रतिपादित है।

यह वह प्रकटीकरण है कि किसी राष्ट्र का 'शीर्ष' उसकी राजधानी है, और राजधानी का 'शीर्ष' राजा है। यह इस प्रकटीकरण के दो साक्षी प्रस्तुत करता है, और फिर पूरी भविष्यवाणी और प्रकटीकरण को इस गूढ़ कथन के साथ निष्कर्ष तक ले जाता है: 'यदि तुम विश्वास नहीं करोगे, तो निश्चय ही तुम स्थिर नहीं रहोगे।' यदि तुम यह विश्वास नहीं करते कि राजा 'शीर्ष' है, और कि 'शीर्ष' राजधानी है, तो तुम स्थिर नहीं रहोगे।

उत्तरी और दक्षिणी राज्यों की दो छड़ियों को जोड़कर जो यहजेकेल का राष्ट्र निर्मित होता है, उसका एक राजा होना था—जो मस्तक है, जो राष्ट्र का राजधानी-नगर है। यहजेकेल का पूरा प्रसंग एक लाख चवालीस हजार पर मोहर लगाए जाने की भविष्यवाणात्मक विशेषताओं का वर्णन करता है, जो तीसरे 'हाय' के अंतर्गत इस्लाम के सातवें नरसिंगे के बजने की अवधि के दौरान दैवत्व और मनुष्यता के संयोजन का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय में सातवीं तुरही के बजने के दिन तब आरम्भ हुए जब 'अब समय न रहेगा' का समय आया; यह 22 अक्टूबर, 1844 था, जब तीसरा स्वर्गदूत आया। तब यूहन्ना ने उस तिथि की कड़वाहट का अनुभव किया, और वहीं उसी समय उसे मंदिर को नापने के लिए कहा गया, परंतु पवित्रस्थान और सेना के रौंदे जाने के बारह सौ साठ वर्षों का इतिहास छोड़ देना, क्योंकि वह काल अन्यजातियों को दिया गया था।

और जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा देखा था, उसने अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया, और उसकी शपथ खाई जो युगानुयुग जीवित है, जिसने स्वर्ग और जो कुछ उसमें है, और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, और समुद्र और जो कुछ उसमें है, की सृष्टि की, कि समय अब और न रहेगा; परन्तु सातवें स्वर्गदूत के स्वर के दिनों में, जब वह ध्वनि करना प्रारम्भ करेगा, तो परमेश्वर का भेद पूरा हो जाएगा, जैसा कि उसने अपने दासों भविष्यद्वक्ताओं को घोषित किया है। और वह आवाज जो मैंने स्वर्ग से सुनी थी, फिर मुझसे बोली और कहा, जा, और वह छोटी पुस्तक ले ले जो समुद्र और पृथ्वी पर खड़े हुए स्वर्गदूत के हाथ में खुली है।

तब मैं उस स्वर्गदूत के पास गया, और उससे कहा, मुझे वह छोटी पुस्तक दे। और उसने मुझसे कहा, इसे ले, और इसे खा ले; यह तेरे उदर में कड़वाहट उत्पन्न करेगी, परन्तु तेरे मुख में मधु के समान मीठी होगी। तब मैंने स्वर्गदूत के हाथ से वह छोटी पुस्तक ले ली, और उसे खा लिया; और वह मेरे मुख में मधु के समान मीठी थी; परन्तु जैसे ही मैंने उसे खा लिया, मेरा उदर कड़वा हो गया। और उसने मुझसे कहा, तुझे फिर से बहुत-से लोगों, राष्ट्रों, भाषाओं, और राजाओं के सम्मुख भविष्यद्वक्ता करनी अवश्य है। और मुझे एक सरकण्डा, जो छड़ी के समान था, दिया गया; और स्वर्गदूत खड़ा होकर कहने लगा, उठ, और परमेश्वर के मन्दिर का, और वेदी का, और उसमें उपासना करने वालों का नाप ले। परन्तु जो आँगन मन्दिर के बाहर है, उसे छोड़ दे, और उसका नाप मत ले; क्योंकि वह अन्यजातियों को दे दिया गया है; और वे पवित्र नगर को बयालीस महीनों तक रौंदेंगे। प्रकाशितवाक्य 10:5-11:2.

22 अक्टूबर, 1844 को यूहन्ना जिसे नापने वाला था, वह वही मंदिर था जिसमें 'उसमें' उपासक थे। प्रांगण को शामिल नहीं करना था। जिस मंदिर में एक वेदी है और जिसमें उपासक भी हैं, वह स्वर्गीय पवित्रस्थान का पवित्र स्थान है। प्रांगण में एक वेदी थी, पर उसे शामिल नहीं करना था; इसलिए परमेश्वर के पवित्रस्थान में दूसरी और एकमात्र वेदी धूप की वेदी है, जो पवित्र स्थान में स्थित है। 1844 में तीसरे स्वर्गदूत के आगमन पर, जो 11 सितंबर, 2001 को मुहरबंदी के समय के आरंभ में तीसरे स्वर्गदूत के आगमन का प्रतीक था, मंदिर केवल दो खंडों से बना था।

पवित्र स्थान कलीसिया का प्रतीक था, जिसे पौलुस देह के रूप में पहचानता है, और परमपवित्र स्थान देह के सिर का प्रतीक था। पवित्र स्थान मानवता का प्रतीक है, और परमपवित्र स्थान दैवत्व का प्रतीक है। वेदी और उससे उठने वाला धुआँ, जो ऊपर उठकर परमपवित्र स्थान में प्रवेश करता था, उस बिंदु का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ मानवता का दैवत्व से मिलन होता है। मानव जाति केवल विश्वास के द्वारा ही परमपवित्र स्थान में प्रवेश कर सकती है, परंतु विश्वासियों का अनुभव पवित्र स्थान में ही पाया जाता है।

वहाँ वे परमेश्वर के वचन का सेवन करें, जिसका प्रतीक उपस्थिति की रोटियों की मेज़ पर रखी रोटियाँ हैं। वहाँ वे अपना प्रकाश मनुष्यों के सामने चमकने दें और अपने स्वर्गीय पिता की महिमा करें, जैसा कि सात-शाखाओं वाले दीवट द्वारा दर्शाया गया है, जिसके विषय में हमें बताया गया है कि वह कलीसिया का प्रतिनिधित्व करता है। वहाँ वे देवत्व के साथ संगति करें, जब उनकी प्रार्थनाएँ मसीह की योग्यता के साथ उठकर स्वयं परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में पहुँचती हैं।

1798 से 1844 तक, मंदिर के वास्तुकार ने मानवता का एक मंदिर स्थापित किया, जिसे वह अपने दैवत्व के मंदिर के साथ जोड़ना चाहता था, परंतु मानवता ने विद्रोह कर दिया। 2001 से, वह एक बार फिर मानवता का मंदिर स्थापित कर रहा है, जिसका प्रतिनिधित्व एक लाख चवालीस हजार के रूप में किया गया है। यहजेकेल के अनुसार, "राजा दाऊद" उस राष्ट्र पर राज्य करेगा, जो मृत और सूखी लाओदीकिया की हड्डियों की घाटी से रूपांतरित होकर एक शक्तिशाली सेना बनता है, जिसे शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय एक ध्वज के रूप में ऊँचा उठाया जाता है।

दक्षिणी यहूदा का राज्य वही था जहाँ राजधानी नगर यरूशलेम स्थित था। राष्ट्र, राजा और राजधानी 'शीर्ष' का प्रतिनिधित्व करते हैं। निश्चय यदि आप विश्वास करते हैं, तो आप स्थापित किए जाएँगे। उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के संबंध में, यहूदा 'शीर्ष' था; वहीं राजसत्ता का आसन था, और वही वह नगरी है जिसे प्रभु ने अपना नाम रखने के लिए चुना। उत्तरी राज्य 'देह' था। सुलैमान के धर्मत्याग के कारण प्रभु ने सुलैमान के विरुद्ध शत्रुओं को खड़ा किया। उन शत्रुओं में से एक यारोबाम था, जो विभाजित इस्राएल के उत्तरी राज्य का प्रथम राजा बना।

और नेबात का पुत्र यारोबाम, जो जरैदा का एक एप्राती और सुलैमान का सेवक था, जिसकी माता का नाम जरूआह था, वह एक विधवा स्त्री थी, उसी ने राजा के विरुद्ध हाथ उठाया। और यह वह कारण था कि उसने राजा के विरुद्ध हाथ उठाया: सुलैमान ने मिल्लो का निर्माण किया, और अपने पिता दाऊद के नगर की टूट-फूट की मरम्मत की। और यारोबाम नामक वह पुरुष पराक्रमी था; और सुलैमान ने यह देखकर कि वह जवान पुरुष परिश्रमी है, उसे यूसुफ के घराने के समस्त कार्यभार पर अधिकारी नियुक्त किया। और ऐसा हुआ कि उस समय जब यारोबाम यरूशलेम से बाहर निकला, तब शीलोनी नबी अहिय्याह मार्ग में उससे मिला; और उसने नया वस्त्र पहना हुआ था; और वे दोनों मैदान में अकेले थे। तब अहिय्याह ने वह नया वस्त्र जो उस पर था, पकड़ा और उसे बारह टुकड़ों में फाड़ दिया; और उसने यारोबाम से कहा, तू इनमें से दस टुकड़े ले; क्योंकि इस प्रकार इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है: देख, मैं सुलैमान के हाथ से राज्य को छीन लूँगा, और दस गोत्र तुझे दूँगा; (परन्तु मेरे दास दाऊद के कारण, और यरूशलेम के कारण, जो नगर मैंने इस्राएल के सब गोत्रों में से चुन लिया है, उसके पास एक गोत्र रहेगा।)

इस कारण कि उन्होंने मुझे त्याग दिया है, और सिदोनियों की देवी अशतोरैत, मोआबियों के देवता केमोश, और अम्मोनियों के देवता मिल्लोम की उपासना की है, और वे मेरी राहों पर नहीं चले कि मेरी दृष्टि में जो ठीक है वही करें, और मेरी विधियों और मेरे न्यायों को मानें, जैसा कि उसके पिता दाऊद ने किया। तौभी मैं सारा राज्य उसके हाथ से नहीं छीनूँगा; परन्तु अपने दास दाऊद के कारण, जिसे मैंने इसलिये चुना कि उसने मेरी आज्ञाओं और मेरी विधियों को माना, मैं उसके जीवन के सब दिनों तक उसे शासक बनाकर रखूँगा। परन्तु मैं राज्य उसके पुत्र के हाथ से ले लूँगा, और उसे तुझे दूँगा—हाँ, दस गोत्र। और उसके पुत्र को मैं एक गोत्र दूँगा, ताकि मेरे दास दाऊद के लिये यरूशलेम में, जो नगर मैंने अपने नाम को वहाँ रखने के लिये चुन लिया है, सदा मेरे सम्मुख एक दीप बना रहे। 1 राजा 11:26-36.

जब यहजेकेल ने दो डंडों को जोड़ा, तब जो राष्ट्र बना, उसका राजा 'दाऊद' होना था, और दाऊद यरूशलेम से राज्य करता था, जो राजधानी नगर था, जहाँ परमेश्वर ने अपने नाम को स्थापित करने के लिए चुन लिया था। दस उत्तरी गोत्र देह का प्रतीक थे, और यरूशलेम मस्तक का प्रतीक था। मनश्शे के पापों के कारण, यहूदा को 677 ईसा-पूर्व में बंधुआई में बाबुल ले जाया गया; इस प्रकार दक्षिणी राज्य के विरुद्ध 'सात काल' के बिखराव का आरम्भ हुआ। उसी समय प्रभु ने यरूशलेम को त्याग दिया।

फिर भी प्रभु अपने बड़े क्रोध की तीव्रता से न फिरे; मनश्शे ने जिन-जिन बातों से उसे उकसाया था, उनके कारण उसका क्रोध यहूदा के विरुद्ध भड़का हुआ था। और प्रभु ने कहा, जैसे मैंने इस्राएल को हटा दिया है, वैसे ही मैं यहूदा को भी अपनी दृष्टि से हटा दूँगा; और इस नगर यरूशलेम को, जिसे मैंने चुना है, और उस घर को, जिसके विषय में मैंने कहा था, 'मेरा नाम वहाँ रहेगा,' मैं त्याग दूँगा। 2 राजा 23:26, 27.

यरूशलेम के "घर" में ही उसने अपना नाम रखने के लिए चुना था, और नगर और वह घर त्याग दिए गए थे, परन्तु जकरयाह द्वारा यह प्रतिज्ञा की गई कि प्रभु एक बार फिर यरूशलेम को चुनेंगे।

तब यहोवा के दूत ने उत्तर देकर कहा, हे सेनाओं के यहोवा, तू कब तक यरूशलेम और यहूदा के नगरों पर दया न करेगा, जिन पर तू इन सत्तर वर्षों से रोष करता रहा है? और यहोवा ने मुझ से बातें करने वाले उस दूत को उत्तम और सान्त्वनादायक वचनों से उत्तर दिया। तब मुझ से संवाद करने वाले उस दूत ने मुझ से कहा, तू पुकारकर कह, सेनाओं के यहोवा यों कहता है: मैं यरूशलेम और सिय्योन के लिये अत्यन्त ईर्ष्यालु हूँ। और जो अन्यजातियाँ निश्चिन्त हैं, उन पर मैं अत्यन्त क्रोधित हूँ; क्योंकि मैं तो थोड़ा ही क्रोधित था, परन्तु उन्होंने क्लेश को और बढ़ाया। इस कारण यहोवा यों कहता है: मैं दयाओं सहित यरूशलेम में लौट आया हूँ; सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है: उसमें मेरा भवन बनाया जाएगा, और यरूशलेम पर नापने की डोरी तानी जाएगी।

फिर पुकार कर कहो, 'सेनाओं का यहोवा यों कहता है: मेरे नगर समृद्धि के कारण फिर दूर-दूर तक फैलेंगे; और यहोवा सिय्योन को फिर सान्त्वना देगा, और यरूशलेम को फिर चुन लेगा।' तब मैंने अपनी आँखें उठाई और देखा—देखो, चार सींग। और मैंने उस दूत से, जो मुझ से बातें कर रहा था, पूछा, 'ये क्या हैं?' उसने मुझ से कहा, 'ये वे सींग हैं जिन्होंने यहूदा, इस्राएल और यरूशलेम को तितर-बितर कर दिया है।' और यहोवा ने मुझे चार बढई दिखाए। तब मैंने कहा, 'ये क्या करने आए हैं?' दूत ने कहा, 'ये वे सींग हैं जिन्होंने यहूदा को इस प्रकार तितर-बितर किया कि कोई मनुष्य अपना सिर न उठा सका; परन्तु ये उन्हें भयभीत करने, उन अन्यजातियों के सींगों को उखाड़ फेंकने के लिए आए हैं, जिन्होंने यहूदा के देश के ऊपर अपना सींग उठाया था, ताकि उसे तितर-बितर कर दें।'

मैं ने फिर अपनी आँखें उठाई, और देखा, और देखो, एक मनुष्य के हाथ में नाप की डोरी थी। तब मैं ने कहा, तू कहाँ जाता है? उसने मुझ से कहा, यरूशलेम को नापने, कि देखूँ कि उसकी चौड़ाई क्या है और उसकी लंबाई क्या है। और देखो, जो स्वर्गदूत मुझ से बातें करता था वह आगे बढ़ा, और एक अन्य स्वर्गदूत उससे मिलने को निकला, और उसने उससे कहा, दौड़कर इस जवान से कह, यों: यरूशलेम उसके भीतर मनुष्यों और पशुओं की बहुतायत के कारण प्राचीर रहित नगरों के समान बसा होगा; क्योंकि मैं, यहोवा की यह वाणी है, उसके चारों ओर आग की प्राचीर ठहरूँगा, और उसके मध्य में मैं महिमा ठहरूँगा। हाय, हाय, निकल आओ, और उत्तर देश से भागो, यहोवा की यह वाणी है; क्योंकि मैं ने तुम्हें आकाश की चारों पवनों की नाई चारों ओर बिखेर दिया है, यहोवा की यह वाणी है। हे सिय्योन, जो बाबेल की बेटी के साथ बसती है, तू अपने को छोड़ा ले। क्योंकि सेनाओं के यहोवा यों कहता है: महिमा के बाद उसने मुझे उन जातियों के पास भेजा है जिन्होंने तुम्हें लूटा है; क्योंकि जो कोई तुम्हें छूता है, वह उसकी आँख की पुतली को छूता है।

क्योंकि देखो, मैं अपना हाथ उन पर हिलाऊँगा, और वे अपने दासों के लिए लूट बनेंगे; और तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे भेजा है। गाओ और आनन्दित हो, हे सिय्योन की बेटी; क्योंकि देख, मैं आ रहा हूँ, और तेरे बीच में निवास करूँगा, यहोवा की यह वाणी है। और उस दिन बहुत सी जातियाँ यहोवा से जुड़ जाएँगी, और वे मेरी प्रजा होंगी; और मैं तेरे बीच में निवास करूँगा, और तू जान लेगी कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तेरे पास भेजा है। और यहोवा पवित्र देश में यहूदा को अपने भागस्वरूप अपना लेगा, और फिर से यरूशलेम को चुन लेगा। हे सब प्राणी, यहोवा के सम्मुख नीरव रहो; क्योंकि वह अपने पवित्र निवास से उठ खड़ा हुआ है। जकरयाह 1:12-2:13.

प्रभु द्वारा यरूशलेम को फिर से चुनने की प्रतिज्ञाएँ तब पूरी हुई जब प्राचीन इस्राएल ने बाबुल की बंधुआई से लौटकर यरूशलेम का पुनर्निर्माण किया, परन्तु भविष्यद्वक्ताओं ने जिन दिनों में वे रहते थे उनकी तुलना में अंत के दिनों के

विषय में अधिक बातें की हैं। प्रभु "अपने पवित्र मन्दिर से उठ खड़ा हुआ" 22 अक्टूबर, 1844 को, जब वह उठा और पवित्र स्थान से अति-पवित्र स्थान में चला गया; और उस समय "सब प्राणी" को प्रभु के सामने "चुप रहना" था, क्योंकि प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त का दिन आ पहुँचा था, जैसा कि हबक्कूक दो-बीस से मेल खाता है।

परन्तु प्रभु अपने पवित्र मंदिर में हैं; समस्त पृथ्वी उसके सामने मौन रहे। हबक्कूक 2:20.

उसी समय, प्रकाशितवाक्य के अध्याय ग्यारह में यूहन्ना को मंदिर को नापने के लिए कहा गया, जिसे जकरयाह ने तब देखा जब उसने "फिर अपनी आँखें उठाई, और देखा, और देखो, उसके हाथ में मापने की डोरी लिए एक व्यक्ति था।" तब जकरयाह ने कहा, "तू कहाँ जा रहा है?" और यूहन्ना ने जकरयाह से कहा, "यरूशलेम को नापने, यह देखने कि उसकी चौड़ाई क्या है और उसकी लंबाई क्या है।" सत्तर वर्ष के निर्वासन के बाद यरूशलेम के पुनर्निर्माण का इतिहास, और वह इतिहास जो 1798 में आरम्भ हुआ पर 1844 में तीसरे स्वर्गदूत के आगमन पर विद्रोह के साथ समाप्त हो गया—दोनों उस कार्य की पहचान करते हैं जो 11 सितंबर, 2001 को आरम्भ हुआ।

दक्षिणी राज्य, यरूशलेम नगर, और राजा दाऊद—ये सभी वह "शीर्ष" हैं जहाँ परमेश्वर का चरित्र प्रकट होना है। उत्तरी राज्य "देह" का प्रतिनिधित्व करता है, और जब प्रभु ने फिर से "यरूशलेम पर दया करने," उसे "सात्वना देने," और उसे फिर से "चुनने" का निश्चय किया, तब वह एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी की ओर संकेत कर रहा है, जिसमें लाओदिकिया की मरी हुई सूखी हड्डियों का आपस में जुड़ना, और उसके बाद उन हड्डियों का जीवन पाकर एक शक्तिशाली सेना बन जाना शामिल है।

वह कार्य यहजेकेल अध्याय सैंतीस में चित्रित है, और यह उत्तरी तथा दक्षिणी राज्यों द्वारा दर्शाया गया है, जो उस कार्य की उपमा देते हैं जिसके द्वारा वाचा की वह प्रतिज्ञा पूरी होती है कि उसकी व्यवस्था एक लाख चवालीस हजार के हृदयों और मनो पर लिखी जाएगी। दो डंडियों में से एक, और केवल एक, सिर के रूप में पहचानी जाती है; और यदि आप विश्वास करते हैं, यदि आपकी आँखें देख सकती हैं और आपके कान समझ सकते हैं, तो इससे दूसरी डंडी का शरीर होना स्पष्ट होता है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

जिस नींव को स्वयं मसीह ने डाला था, उस पर प्रेरितों ने परमेश्वर की कलीसिया का निर्माण किया। पवित्र शास्त्रों में कलीसिया के निर्माण को समझाने के लिए अक्सर मंदिर निर्माण का उदाहरण दिया गया है। जकरयाह मसीह को उस 'शाखा' के रूप में बताता है जो प्रभु के मंदिर का निर्माण करेगी। वह अन्यजातियों के इस काम में सहायता करने की भी बात करता है: 'जो दूर हैं वे आकर प्रभु के मंदिर का निर्माण करेंगे;' और यशायाह कहता है, 'परदेशियों के पुत्र तेरी दीवारों का निर्माण करेंगे।' जकरयाह 6:12, 15; यशायाह 60:10.

इस मंदिर के निर्माण के विषय में लिखते हुए, पतरस कहता है, 'जिसके पास आकर, जो मनुष्यों से तो अस्वीकृत, परन्तु परमेश्वर के द्वारा चुना हुआ और बहुमूल्य जीवित पत्थर है, तुम भी, जीवित पत्थरों के समान, आत्मिक घर के रूप में बनाए जा रहे हो, एक पवित्र याजकाई, ताकि यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को स्वीकार्य आत्मिक बलिदान चढ़ाओ।' 1 पतरस 2:4, 5.

यहूदी और अन्यजाति जगत की खदान में प्रेरितों ने परिश्रम किया, नींव पर रखने के लिए पत्थर निकालते हुए। इफिसुस के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में पौलुस ने कहा, 'अतः अब तुम परदेसी और बाहरी नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के साथ सहनागरिक हो, और परमेश्वर के घराने के सदस्य हो; और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बनाए गए हो, जिसका मुख्य कोने का पत्थर स्वयं यीशु मसीह है; उसी में सारी इमारत एक साथ अच्छी रीति से जुड़कर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है; और उसी में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए साथ-साथ बनाए जा रहे हो।' इफिसियों 2:19-22.

और कुरिन्थियों को उसने लिखा: 'परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया है, एक बुद्धिमान प्रधान राजमिस्त्री के समान मैंने नींव रख दी है, और कोई दूसरा उस पर निर्माण कर रहा है। परन्तु हर एक व्यक्ति ध्यान

रखे कि वह उस पर कैसे निर्माण करता है। क्योंकि जो नींव रखी जा चुकी है, अर्थात् यीशु मसीह, उसके सिवा कोई और नींव कोई नहीं रख सकता। अब यदि कोई इस नींव पर सोना, चाँदी, बहुमूल्य पत्थर, लकड़ी, घास, भूसा रखकर निर्माण करे; तो प्रत्येक का काम प्रकट हो जाएगा: क्योंकि वह दिन उसे प्रकट करेगा, क्योंकि वह आग से प्रकट होगा; और आग हर एक के काम की परीक्षा करेगी कि वह किस प्रकार का है।' 1 कुरिन्थियों 3:10-13.

"प्रेरितों ने एक दृढ़ नींव पर, अर्थात् युगों की चट्टान पर, निर्माण किया। इस नींव पर वे संसार से उत्खनित किए हुए पत्थर ले आए। निर्माताओं का परिश्रम बाधाओं से रहित न था। मसीह के शत्रुओं के विरोध ने उनके कार्य को अत्यंत कठिन बना दिया। जो लोग झूठी नींव पर निर्माण कर रहे थे, उनकी कट्टरता, पूर्वाग्रह और घृणा के विरुद्ध उन्हें संघर्ष करना पड़ा। कलीसिया के निर्माण में परिश्रम करनेवाले बहुत-से लोग नहेमायाह के दिनों में दीवार के बनानेवालों के समान ठहराए जा सकते थे, जिनके विषय में लिखा है: 'जो दीवार बनाते थे, और जो बोझ उठाते थे, और जो लादते थे, वे हर एक अपने एक हाथ से काम करते थे, और दूसरे हाथ में हथियार धारण किए रहते थे।' नहेमायाह 4:17।" प्रेरितों के कार्य, 595-597.